

**THE INSTITUTE FOR
ADVANCED STUDIES
OF WORLD RELIGIONS**

**FILM—STRIP NO.
MBB—1971—71-75**

**BUDDHIST SANSKRIT
MANUSCRIPTS**

MBB-1971-71

1. Film strip number

24
2. Source

AÑJANA, BALIKARMA

3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.

5. Year in which MS was copied
(Nepali Samvat and Christian Era)X
6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER

7. Material (Palm leaf, etc.)

NEVĀRĪ

8. Script

8 cm. x 26 cm.

9. Size

6
10. Lines to a page18
11. Number of leaves in complete workX
12. Missing leavesX
13. Author and Date of composition
(if given)X
14. Number of Chapters

15. Remarks

I photographed here some parts of practices on black arts dealing some Vajra yāni gods as for example Candā Mahāroṣaṇa, Mahākāka, Jagāmbhā etc.

Almost the books on black arts are composed including Sanskritā and Nevārī.

Black arts is the one of the subject of Buddhist Tantra.

October 27, 1971.

Date photographed

ॐ नमो श्री ४ त्रयमस्य भाषनार्थे ॥ ॥ तत्त्वभाषा निरुपम ॥ प्रथिगन्धस्य वादानन्दसकं
यातिग ॥ ननु दण्डिक दूयताः ग्रहनर्षिताः उदावपुर्गताः च नीटास्त्रानः ऊरुमदयकं ॥ द्रव
पुञ्जायाय ॥ समयरुडुच्छाय ॥ त्वय्यदयः चक्षुः कुनकाः ॥ मारुनिरुयः ॥ अंगटस्त्रानयानाः
गत्रिचिंतादुतन ॥ वनकचित् ॥ गनदाः ॥ मेधस्तनयानाः ॥ विरुचयमनु ॥ ॥ ॥ ॥
मूर्त्तिः श्रीः सादृ ॥ मयस्तुताकापुर ॥ अथाद्वयस्य सप्तस्य रुडुच्छाय ॥ स्त्रा-च्छाय ॥ गमयतीमं

नपुजायां ४॥ उक्तं कामाक्षी काय ॥ विमलं कर्णमिदं ॥ विमलं कर्णमिदं ॥ विमलं कर्णमिदं ॥
 ५॥ नवीरुपुय ४॥ दवदकामारु निसुअमकं ॥ यियदसहाथं ॥ यियदसहाथं ॥ यियदसहाथं ॥
 ६॥ थचमात् ॥ दजीना ॥ दजीना ॥ दजीना ॥ दजीना ॥ दजीना ॥ दजीना ॥ दजीना ॥
 ७॥ कायसमय ॥ थशमारु निसाभनविधि ॥ ८॥ थमारु निसाभनविधि ॥ ९॥ थमारु निसाभनविधि ॥
 १०॥ वं ॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥

नार
वृक्ष
न

न
क्षेत्र

सात्यसात्तरास्यडासिषडा ॥ ॥ उँ अँ कँ चँ टँ नँ पँ यँ गँ खाँ हा ॥ ॥ भारुनिनय्यडे ॥ थमनु
भारु ३ दातमइपुथनसात्तरास्यडास्यरवा ॥ ॥ नानावधनदयकेट्यानालेडिडातव ॥ ॥
थमारुनिनयमटिडे ॥ अषाटणमद ॥ ॥ भारुनिनडुलेऊप्रलप्यभारु ॥ थअषाटनहात ॥ स
डासिडापनिरुका ॥ ननअभयमरु ॥ पनाककुर्यमरुथचात्रिडा ॥ टमरुनविधि ॥ मगडापनि
छदाढमरुडाकना ॥ ॥ उँ नमार्वाअचंद्रमरु ॥ नाषनाये ॥ नमरु ३ छुडय १ मदय १ शासा

मस
वृष

हस्ता
धार्य
मगूर

वज्रीकुतु २ स्थाह ॥ अमनुश्रुत ॥ अमोहनिजपत्र ॥ यममंदेषुथनसंकेत ॥ अथनम्य
वज्रीकाशवत्तयाट्टाक्ष ॥ मवजथमट्टाक्षायैमद ॥ ॥ उंचानश्रयात ॥ प्रमायवत्त
य ॥ विवीमत्तयौवज्जमहानामनाये ॥ प्रवजकव वकु ३ २ स्थाह ॥ अमनुश्रुत ३ १ मा
हनिजपत्र ॥ वजमट्टाक्षनकेनेय ॥ अमोहनाय ॥ वल्लुसंकवकट्टाक्ष ॥ अमकवस
नयन ॥ यथनामकयाक्ष ॥ मिजमदगद्वनवश्रुताक्ष ॥ ॥ उंचावज्जमहानाम

वस्य

खूला

नायः नगच्छे २ नागश्चानय २ अमृकषटमा २ द्रुं द्रुं स्वाहा ॥ ॥ अमंनु धात् ३४ अमोह
नीकापदसपादविश्वरूपसर्प ॥ पिडादापाटगथुदैनय ॥ अमृकषटमा ३४ अमोह
नमस्कृतिनायकं अमृकषटमा ३४ अमोह ॥ ॥ अमंनु धात् ३४ अमोह
अमृकषटमा ३४ अमोह ॥ अमंनु धात् ३४ अमोह ॥ अमंनु धात् ३४ अमोह
यके ॥ ॥ अमंनु धात् ३४ अमोह ॥ अमंनु धात् ३४ अमोह ॥ अमंनु धात् ३४ अमोह

मनुष्यात् ऊ४ आषाढमद १०८ थमोरुनिडा नापे ॥ कापोदसयाद श्रेष्ठ ॥ यडाङ्गना को
थमसटय ॥ भवगङ्गागइषवित्तडायमरू ॥ नागिदयमरू ॥ मिहयमुं हयमइ ॥ विघ्नहयम
इ ॥ समुनासिर्न थउरुमरू ॥ ४ ॥ ॐ नमोऽरुं इवकुवं डमरू नापनाये ॥ विष्णुकववाय
स्याह ॥ थमनुष्यात् ॥ आषाढमद ॥ ऊपत्तपेङ्कय ॥ थमोरुनिऊपत्तपेडिय ॥ सऊनभवत्
परुणावगमुनेपुंयात्तमरूडाह ॥ ॥ थमोरुनिडा ॥ थमनावायारूडापोदविश्वं ॥ उवि

लका

नयस
लका

नियानुसथनेटय ॥ मचामदुयकेटय ॥ ग्मनादुयाहुरूको ॥ उविनियामादसद्धुचक ॥ मीचा
दुयकेरुजा ॥ ॥ थमोरुनिडा ॥ नुद्रमयया नाडोनापपोद विस्थ ॥ उविनियानुस ॥ थुदेटय
थयाकानमोरादुश ॥ ॥ थमोरुनीडा ॥ नोवन्दनडा ॥ थंसदोश्चत्वनक ॥ मिसागदाका
थन लैथंनकायकंकुय ॥ थन ॥ थमोरुनिडा ॥ शरुइडासलगासद ॥ थंसदोश्चत्वनक ॥ मि
थरुत ॥ मिसाथरुत ॥ म्वाटात्रथंनकायकंकुय ॥ ॥ जोतुमारुनाडाग्रीसडा ॥ नषसवाना

जाक

अत्वनकं नयकं ॥ अथाथमोरु निडा ॥ एम यावद्दडा ॥ द्यायकादूखानयाटिन ॥ दयाडा
नक्षत्रिगुगुण्डिय ॥ दृष्टावस्तुनकवक ॥ मजाकजावक ॥ मी नडा नसी ॥ यद्वायाकं र्हा
नडा यिडा ॥ हान ॥ अथमोरु निन ॥ थमनदडा वट्टनदडा ने ॥ भवडा वदरुनदग्ध ॥
षंसशावकं रुना ॥ षस्वाय ॥ अथमोरु निडा ॥ श्रीखन्द ॥ कुकुम ॥ यश्चनटिद निखळ्ळु
नदं नाजमोरु निथ ॥ नाजमोरु ॥ त्रकवद्दडा अथमोरु निडा ॥ मनसपंक्रसद्रुगनदन ॥ वाक

नमन शनक रूना ॥ मन शं के ॥ शानरु वापाडा ॥ अमारु निडा ॥ द्रुगद्रुगा ॥ अरुवा
कथशिवशरुना ॥ वरुष ॥ उं द्रां की वमु महा वाषनायी नों नों रूं अग्रि रुमह नाय स्वा रु ॥ अ
मंनु वात् ॥ अमारु निअपनये ॥ रुमत्त वं कनन वात् ॥ ग्राह यत्त वाग्ध मिद्रुग नैमपुक ॥ स
फुटिका नखावक रूना ॥ मिमपु ॥ उं रु रु रप सत्तपन ॥ के वा के मारु कात्त के ॥ अरुमन्नुष
दव जुयादिनी ॥ अरुत्त ऊ नु स्वाही ॥ अमनु वात् ॥ अरुषटडा ॥ अमारु निडा कापदग ॥ वा

दविश्व ॥ नायत्तगर्धयद्वीवडादगाकुङ्कयडाङ्कगट्यर्थ ॥ भवनश्मविश्वमरु ॥ द्रुयार्थमरु
 दवस्तपिभश्चनश्मविश्वमरु ॥ गमस्तप्यरुसांनिरुडांनडाथ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 न उस्मात् ॥ ॥ थनमोहनिस्त्ययाटेडा ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हस्तसिंहास
 निकर्मनुत्तुसाष्टशुण ॥ नवाहुमेवो ॥ निटिक्कुंनुत्तमावदुनिडा ॥ याकाश्चनाडुरुकेगतपिंऊ
 नालवाङ्गीकनाउममभदलमङ्गनाय ॥ १ ॥ चक्षुःशुद्धिदृष्ट्यादिकंशुशुकाटि ॥ गङ्गिरी

श्रुतसंगितश्चषड्दशकतापः ॥ ननुयैष्टद्वयनिविष्टहस्तितायी ॥ मारुग्वनिलवडुसा ॥ शुभमे
द्रनाय ॥ २ ॥ सिंभुनपु ॥ सप्तसादृष्टिमावहन्ति ॥ विष्णुश्रृङ्गकासपनिमाश्वसकिंदधना
॥ मायतकागनसमासिष्टवातनुपि ॥ कोमादिकावडुमे ॥ शुभमेद्रनाय ॥ ३ ॥ गमनुश्व
क्षिप्रतिनिरागत्रासनस्थी ॥ मुहिल्वर्षकजमभि ॥ नवकोवनाद्या ॥ संघासिचक्रगदया ॥
किटनाउरुसा ॥ श्रीवैष्णविस्तननामिगदापसत्ता ॥ ४ ॥ उत्तुलकिंशुकदलादिक ॥

पुष्पकानि ॥ धात्राटि धातुकथिना जल्लुक्कोत्तवकुं ॥ मिमसिपागवलयाकिर्लिचात्रहृत्ता
वात्ताहिकामहिषजातमाभि ॥ ५ ॥ वृद्धं धजिडाहत्त वाम्भुशनरुनी शैर्गो ॥ त्पयदगस
पयिष्मभरमाना ॥ उवाडागजस्थिता ॥ ध्वजवर्कुरुता ॥ सन्दिनमामिभुत्किं तदववैशा
॥ ६ ॥ पुष्पस्थितातत्तकनक्षकप्रातमाता ॥ स्वत्वाङ्गुलीशुशुमकयानगकिरुता ॥ दक्षक
नत्तवदम् ॥ ऊगदकध्वजीवामुं तुी कासन्ननोमिगदाप्रसत्ता ॥ ७ ॥ शुद्धकसानुविला ॥ क

मनायर्लुकि ॥ पिनरुनीसरीटिहावशुभहमाना ॥ खर्जजीशुववनदाख्यपानीपुंया ॥ स
श्रीनमाभि ॥ महटिमरुनीयमुसनी ॥ २ ॥ ध्याजानीनाधीपशा ॥ गकलजगर्कनुहेववाविश्व
कर्ला ॥ जर्मजगत्सहतागकर्त् ॥ कुत्तयुयुयाग्रिवकक्ष्क्ष ॥ अजर्द्धाविलम्भनार्थ ॥ कडोर
गरुनीटपाशुगुंश्चनिगुंन ॥ रूपाटिकुत्तनुपपटिवनगहिने ॥ जहिमीऊज्यास ॥ ५ ॥ रुहिना
पुर्नदरुपुशुकस्वना ॥ सकिरुस्माट्क्षति ॥ दऊरुस्सुशुशुजीनयनजचना ॥ नदनीयजीन

ॐ॥ नीलसंमार्चक एवमुक्त॥ वगदा काऊ नम्यउहउं॥ ऐं ह्रीं श्रीं गलस्रमटनगननार्थं
कृणोरुहलिं॥ १०॥ श्रीभसन्धवशुकनाथ॥ ॐ ह्रीं प्रसिद्धाकन्धशुयानि॥ ऊनकानवशु
मकशु॥ ८॥ गैनिशुटसर्किमुद्रात्तर्लादक्षनीपायाभमर्क॥ वगजसिधिवारुनस्था॥ ११॥ पु
र्वपापं कृण्म्यापटिदिवग॥ रुमद्रसलताविशुता॥ दासिद्रा नागल गिवरुनसिपूगन्धपितुल्लान
षामर्त॥ ऐं माटापादपुञ्जी॥ ऊममपितुनियर्ध्विर्ध्वनयानि॥ मर्द्धावित्यापदार्त॥ रुदपिममसि

ॐ षामाटी सिद्धि देवि ॥ १२ ॥ मैत्रुहिर्न क्रियाहिर्न ॥ एकहिर्न नुअ सुतं ॥ अरुटेनाशहिर्न
 ॥ १३ ॥ कस्तूरं पदम्यश्वनी ॥ १३ ॥ ॐ लि मा रु नी सा धनयाट ॥ श्री मा र्ग ना रु व सो ग स्मा र्ग ॥
 ॥ अरु स रु नि या रु अंगु ति २ रु डा र्खं त्वा क तं ष स नि श्व ॥ गानकं अरु सिन क डा या ॥ न डा अ उ
 ति न पा थ म न यी क द डा नि श्व य ॥ ॥ अरु य रु नि या रु म् १ थ न स रु नो त्वा न क ॥ तं व न नि
 श्व गान मि सा रु डा न व ष डा ॥ ॥ थ अरु स डा सो वि ना रु न डा ॥ ॐ मु ग नी श्व पा ट स नि त सा डा

उत्तिम

मि सा रु

यानं डाषं डा ॥ एतिन सावरा ॥ थमारु नी डा नात्त मुन डा नी श्व नानै टिक पायं दे वषं डा ॥ टिक नाया ॥
थमारु नी डा ॥ युगुली डा न श्व त्वा दे ॥ ओं य चा डा दे डा ॥ डा य चा या ॥ ॐ सिद्धि गु गु श्राम्मा ॥ श्रवना
दिपा क्षां ती हूं ग ॥ श्रवना दिपा क्षां ती हूं ग ॥ श्रवना दिपा क्षां ती हिं हूं ग ॥ श्रवना दिपा क्षां ती हिं
हूं ॥ ॐ श्व न म हा दे व ॥ पा र्वा ति गु गु श्राम्मा ॥ थ म नु क्षा त् ३ थ मारु नी रूप न पं ॥ ट श्व द्वा सि डा डा
ह क्षा त् क्रिय श्ल ॥ हिं हूं य ॥ ॐ न म श्च गु म हा ना म ना ये ॥ हूं हूं न मा वि त्त चा मु नु ये ॥ ग ह य चा

[illegible]

अहस्तमेषना ॥ श्रीमहादेवगर्भाद्भावा ॥ पातुष्टीर्ध्वद्वया ॥ नामनुपधस्तनप्यदडा ॥ अहस्त
मेषनाचस्तनप्य ॥ स्वर्गपाफरुडा ॥ अहस्तमेषना ॥ भवयासिष्यायाटवियमश्वडा ॥ यडासि
ष्यायाटजकवियश्वडा ॥ यडाहकिमरुडाक्याटवियमश्वडा ॥ असासुपुकागयाटसा ॥ मरु
पार्ककनाकरुता ॥ अमपत्तर्पस्तसा ॥ समस्तसिद्धिरुडा ॥ ॥ अनेतीदगनुपधस्तनप्यया
टज्ञायशुना ॥ ॥ ॥

२३ पावसि ध

ॐ नमो श्री गणेशाय नमः ॥ मुमुक्षु मंदन ॥ दिगुनी ॥ जाप ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ जाप स ॥ ॐ नमः ॥
उयागं वयं नार्थमः ॥ अस्माकं यि गमना श्री मत्स्य इव दजाः वीतं यना धनं ॥ समप्रह ॥ श्री नमः ॥
सिद्धिं को धः ॥ नृगम तज्जितः सर्वान्यास उद्धमनः ॥ दिक्त्रियनः कृचग्रहः ॥ तिथीयनुः सवर्जः वास्यः
उद्धमनः धतः कपातुं दिश्यनः यस्मिना दशो जीयकः ॥ सर्वसिक्तातः ॥ गपनः पद्म दारुणी मासः
नः ॥ ॐ श्रीमनुः ॥ श्री २ यागं वयं नार्थमः ॥ अस्माकं यि गमना श्री मत्स्य इव दजाः वीतं यना धनं ॥ समप्रह ॥ श्री नमः ॥
गमवयाय स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥
धायज किनीय स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ नमः॥ यागभवंनायः सर्वलवामकंदला॥ यागिगुननायकः॥ यागभवंतंजङ्गनायः॥ उवादनः
दासर्वसत्त्वः॥ उवादनः॥ श्रीयागभवंतंनामामिहं॥ ॥ ॐ नमः श्रीग्यानजकिनेः सर्वलवामनायिः मरु
रुः॥ धनवतः शनीः वयदं माद्रुजयनी॥ वति ॥ ॐ नमः श्रीयागभवंनायः॥ ग्यानजकिनीः समापन
यः क्रोद्धः॥ ॐ गभनाः॥ अकमसकूत्रीसः॥ धनायः॥ वरुसत्त्वतूपायः॥ ॐ वनीगीद्रुः॥ ॐ रुद्रस्वादो॥
मध्यसकितः॥ ॐ वीरुद्रुद्रुकायासि॥ धनरुद्रुका॥ नूनानीरुद्रुका॥ उवादनः॥ वद्रापवयुवीः॥ धनपूष
नमास्तु॥ ॐ ॥ ॐ द्रोः श्रीद्रुद्रुः॥ आमाद्रुद्रुका॥ नूवीद्यामायद्रुद्रुका॥ ॐ ॥ ॐ सयायि सि
द्धिनाकः॥ अवात्सः॥ सिद्धिद्रुद्रुका॥ ॐ ॥ ॐ स्वलावः॥ धनः॥ सर्वधमाना॥ अलावः॥ ॐ

हैः सर्वधर्मनेनामवजः स्वरावमकोहं॥ आकामनः॥ पृष्ठिचासन॥ ॐ रुद्रचदिकाय
नमः स्याहो॥ ॥ वद्राय स्याहो॥ ॥ वयवत्रनिय स्याहो॥ ॥ वनिद्रूपाय स्याहो॥ ॥ सिद्धियायि
यनम स्याहो॥ ॥ दिव्यरूपिनीयनम स्याहो॥ ॥ पूजाभावाभावा॥ ॐ मानववर्गसकासंः स्व
रुद्रकवीरकः कामरूपिमहाश्वीः उग्रवन्धुयनः॥ वसि॥ ॐ द्रौणीनजिम्हकासंः ध्यान
द्रष्टा लयावरुः उद्भक्तवीर्याः उग्रपात्रायः हरुद्रदन्तः उग्रहिमलावलिपटिः ग्यङ्क
दरुशपं वशस्वः स्वाहिः लज्जः वीर्यहेजवन्धुपनः वसिपटिः ग्यङ्क २ द्रौं रुद्र स्याहो॥ ज
धनसावा॥ धन॥ गन्धर्वसुकोनः द्रुमायी॥ ॥ पात्राय ॥ ॥ स्वानवा ॥ ॐ गङ्गा

[illegible]

ॐ शुक्लकवीश्वरं ॥ वक्राद्यावाहयं यवीः श्वानपूजं नमस्तु ॥ ॐ श्रीं श्रीं रूपयोगस्य वीद्यासा
यः कुरु स्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीवक्रानाकः ॥ श्रीवक्रतृप्तिसिद्धिं कुरु स्वाहा ॥ ॐ श्रीवक्रायनीः पी
तवृक्षः ॥ एकस्मिन्पात्री नी चक्राः वउ लजामहायवीः सर्वादिननलेखनी मत्तउलजाः वीरपात्रं ॥ श्री
पुतलजायः ॥ द्वयनः ॥ श्रीशुक्ल कमदपूरुं सासनसंस्थिताः ॥ ॥ साहसं ॥ ॥ पूज्ययासा ॥
ॐ कुरु उवक्रायनीयनमस्वाहा ॥ ॐ वक्रवज्र हेतवायनमस्वाहा ॥ नागकेशशुक्रायनमस्वा
हा ॥ महायक्षनागनाजायनमस्वाहा ॥ ॐ रुं गमस्नीयनमस्वाहा ॥ ॐ श्री नूपर्वतायनमस्वाहा ॥
पट्टिद्यानवमयाः ॥ निधियनमस्वाहा ॥ ॐ आदिश्याय नमस्वाहा ॥ ॐ योगउज्जयः नमस्वाहा ॥ विनू

प्राजाय नमस्वाहा ॥ ॥ पं ॥ या ॥ ३ ॥ ॥ ॐ पूर्ववक्त्राय नीपिताः श्रुकात्रवीजसं हवाः स्वायश्वा
वीरपापं वः नमस्ते रुं सवारिनी ॥ ॥ व ॥ ॥ ॐ श्रुकात्रवीजसंः जातः पूर्ववक्त्राय नीजं दूँ मम
शपत्री वात्रस्य सां नी पूषि कूतः दं वतिः स्व १ स्वादि १ वक्त्राय नीय दूँ रुं स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ ॐ
रुं न सुवी कूतः ॥ ॐ मरुव नूः कपात्रं वः तप्य नमस्तदिदिम ॥ नूडा नो वारुय शवीः श्वान
पृथ्वी नमः ॥ ॥ या न ॥ ॥ ॐ द्रौ ग्री दूँ रुं काना यिनी श्विना साय दूँ रुं स्वाहा ॥ ॥ स ॥ ॥ ॐ
काना दायनी नाकः श्रुवत्त १ सिधु दूँ रुं स्वाहा ॥ ॥ श्वान ॥ ॥ ॐ माश्रस्य नीस्यत्त वः नूः क मरुषाः
तिनी चणः वउ हजाम रुशवीः सर्वा रं नत वनीः मरुत्त वः वीरपापं ॥ श्रुपत्त वः दयन ॥ जी ॥

नमस्तुभ्यं शशाङ्कः ॥ ॥ पाताय ॥ ॥ पूषा ॥ ॥ ॐ रुद्रमाक्षस्त्रीयनमस्तु
वीयनमस्तु ॥ ॥ जोदायनीयनमस्तु ॥ ॥ जोद्रायनीयनमस्तु ॥ ॥ सोद्रद्रहैववायनमस्तु ॥ ॥
गणपात्रनागनाजायनमस्तु ॥ ॥ इन्द्रिदसम्यायाः निधियनमस्तु ॥ ॥ सामवासत्रनमस्तु ॥ ॥
पुंगवकेगकोत्रायित्रीज्जायनमस्तु ॥ ॥ नारुपात्रायनमस्तु ॥ ॥ कुर्येत्रायनमस्तु ॥ ॥ ४
वृज्जायनमस्तु ॥ ॥ केनागः पुर्वर्कनाजायनमस्तु ॥ ॥ दिशत्रूपिनीयनमस्तु ॥ ॥ पं ॥ ना ॥
ॐ माक्षं यूर्कं प्रशुक्राः ककात्रनीजसंलवाय ॥ ॥ स्वायूष्मावीरुपात्रनमस्तु ॥ ॥ वृषवा
रुनी ॥ ॥ वरि ॥ ॥ ॐ त्रिं नीर्तजिः मन्त्रसंकासः ॥ ॥ योत्तपुद्रुः ॥ ॥ ल्यात्तु ॥ ॥ उद्भक्तस्त्रीरूपाः ॥

उपायायः वृद्धदत्तः सहिम्भुवतीपीठ्यङ्क २ रुन २ पंच २ रुव २ स्वादि २ तज २ द्यितेयवद्रूपेन
वनिपुतिग्यङ्क २ दूँरुट्स्याह ॥ ७ ॥ ३ ॥ शान्तिप्रदकृत्य ॥ उँ वीद्रकः सकिरुसुकं ५४ ऊष्णानि
ऊयमात्रीनः कामात्या वारुनीय वीः ध्यानपद्यानम् ॥ पान ॥ उँ क्रौं श्रीं दूँरुट्स्याह ॥ ७ ॥ ३ ॥
सायः दूँरुट्स्याह ॥ ७ ॥ ३ ॥ उँ व कामात्री उमात्राक ॥ ७ ॥ ३ ॥ सिद्ध दूँरुट्स्याह ॥ ७ ॥ ३ ॥ को
मातीः न केव न्मु एक म्भुषाः तीनी श्रुत वडलशामकाय वीः हावाहनमहोषिता म्भुततश
वीद्रपाणः अपनलगाद्यन सकिकर्त्तव्यनीता मयूरासनसिता ॥ स्वा ॥ लघु ॥ ॥ पू
ऊचासं ॥ ॥ उँ दूँरुट्स्याह ॥ ७ ॥ ३ ॥ सत्ववन्दे नवायनमस्वाहा ॥ पद्मनाग

[illegible]

ॐ ॥ भूप ॥ ॐ ॥ विष्णु विष्णु ॥ अक्षत शसि घृकू प्रद्वैरुखा ॥ अक्ष न ॥ वीष्णु विष्णु
वत्तां नां ॥ अक्षत शसि घृकू प्रद्वैरुखा ॥ अक्ष न ॥ वीष्णु विष्णु
वीष्णु ॥ अक्षत शसि घृकू प्रद्वैरुखा ॥ अक्ष न ॥ वीष्णु विष्णु
प्राचास ॥ ॐ ॥ अक्षत शसि घृकू प्रद्वैरुखा ॥ अक्ष न ॥ वीष्णु विष्णु
वास ॥ अक्षत शसि घृकू प्रद्वैरुखा ॥ अक्ष न ॥ वीष्णु विष्णु
यनमस्वाहा ॥ वीष्णु विष्णु ॥ अक्षत शसि घृकू प्रद्वैरुखा ॥ अक्ष न ॥ वीष्णु विष्णु
हा ॥ अक्षत शसि घृकू प्रद्वैरुखा ॥ अक्ष न ॥ वीष्णु विष्णु

[illegible]

[illegible]

रूपं नमस्कारम् ॥ ॐ द्रुमं नमस्कारम् ॥ ॐ द्रुमं नमस्कारम् ॥ ॐ द्रुमं नमस्कारम् ॥ ॐ द्रुमं नमस्कारम् ॥
 यनमस्कारम् ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥ वीक्षिन् रूपनीयनमस्कारम् ॥ षष्ठमिव द्रुमं
 याति धियनमस्कारम् ॥ ॐ शुक्रवातसस्तनमस्कारम् ॥ वायव्यं नमस्कारम् ॥ क्रान्ताय नमस्कारम्
 समस्मानायः मद्रुद्रनां थयनमस्कारम् ॥ ॐ पश्चिमं द्रुमं नमस्कारम् ॥ ॐ पश्चिमं द्रुमं नमस्कारम् ॥
 एवाः स्वायूष्मावीर्यपाञ्चनमस्कारम् ॥ गजवारुनी ॥ वति ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥
 यावत् ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥
 स्वादि ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥ ॐ क्रोन्कनागनाजयनमस्कारम् ॥

शायवर्माकर्णं शक्तिरवर्जं रुद्रकविद्वकं चाम्बुद्रावाहुर्यवीः शानपुष्पं नमो ह्युने ॥ ३ ॥ ॐ
कौश्यां द्रुहेश्वीकोटविद्यासाहं रुद्रस्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ यवाम्भुयः नर्कवर्तुः कंकातत्रूपः
वक्तुनशसिद्धिद्रुद्रस्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ चाम्भुयः नर्कवर्तुः नार्कवर्तुः नार्कवर्तुः नार्कवर्तुः
नीवउतुजा ॥ ६ ॥ ॐ चाम्भुयः नर्कवर्तुः नार्कवर्तुः नार्कवर्तुः नार्कवर्तुः
उताशनं ह्मिता ॥ ७ ॥ ॐ चाम्भुयः नर्कवर्तुः नार्कवर्तुः नार्कवर्तुः नार्कवर्तुः
श्वीकोटजायनमस्वाहा ॥ ८ ॥ वायु शयवतायनमस्वाहा ॥ सिद्धिनाथायनमस्वाहा ॥ पुनासनी
यनमस्वाहा ॥ संरासलेनवायनमस्वाहा ॥ वा ॥ ९ ॥ किनागनाजायनमस्वाहा ॥ उदवववीजायन

[illegible]

[illegible]

ऊजपायाय वृहद्दमः ॐ ह्रीं मरुतावतीपतिग्यङ्क १ रुन २ दह ३ पंख ४ ख ५ स्वाहि ६ ख ७ ८ वी
 घृहे नव रूपेण त्वतीपतिग्यङ्क १ ह्रीं रुद्र स्वाहा ॥ ३ ॥ य न गे न सं क वी न न ॥ व ति ॥ ॥ ॐ वी
 ध्या न क्त मरुता ॥ को मरुतावत उदा क्त मः ॥ १ ॥ देव तिग्यङ्क १ ख २ स्वाहि ३ सर्व ४ ऊजासादिनः
 गि ५ १ वं ६ १ रुन १ ग्यङ्क १ सर्व वी ध्या न ॥ ६ १ द १ ले २ ख ३ दह ४ पंख ५ मथ ६ ७ १ ॐ आ ३ विद्या
 न क्त मः १ ह्रीं रुद्र स्वाहा ॥ १ ॥ मरुतावत ॥ ॐ मरुतां का याय ३ सा ना प्र का ली न्त्र ॥ अयवी म को याय ३ ॥ १
 मृत्तया य का नीन ३ य मि उ गि ३ सा सम त सि ३ १ ॥ देव ति ग्यङ्क १ ख २ स्वाहि ३ सर्व ४ ५ सत्वा नी ३
 मा न य १ ६ १ द य १ ग्यङ्क १ वं २ रुन १ दह २ पंख ३ मरुतां का याय १ ह्रीं रुद्र स्वाहा ॥ १ ॥ ३ ॥ ॐ

[illegible]

य १ ॐ देवसिग्य २ प्रियायस्त्वामाथ तज्ज २ ॐ रुद्र स्वाहा ॥ अमात्रवासे ॥ ॐ मृजुवव ३ नी
नाथ ॥ ॐ काशकाश मृजु रुद्र प्रष्टादि उद्गुरुनः प्रष्टमहालयः स्वदाजनः पादुकादिलक्ष्मणा
दिः सिद्धिदयः ॐ देवसिग्य २ पंचामृतादिसहिताग्य २ मृजुनास्य २ नात्र उतात्र स्वाहा ॥
३ ॥ ॐ नमो माताकाश ॥ ॥ ॐ पिण्डविष्णुनसवतीः सर्वोपननासनीः सर्वप्राग्नीवासनी ॥ स
र्वरथवीनागनी ॥ ॐ देवसीग्य २ सर्वरथपद्मना ३ अमात्रय २ ॐ रुद्र स्वाहा ॥ ॥ वज्रम
हनावनस ॥ ॥ ॐ नमो लगवत् २ वशी चन्द्रमप्राधनाः शिवाशुतः नमस्तुता असनकनाय
सुकुतमात्रवीनागनाय ॥ प्रष्टसि कूस्तमवपूष ४ प्रष्टोताय कित ४ सप्तप्रायः ॐ देवसिग्य २

ममसर्वविद्याह्वनः चतुर्मात्रायः नीवानयः २ जस्य १ लामः २ छिद्रः २ लिङ्गः २ सर्वदृष्टसत्त्वानू
नमः ॥ नृद्धिर्विनेकार्त्तस्मिन्नुत्तरेण स्वस्वाहा ॥ ॥ पूर्वसु ॥ ॥ ॐ धृतराक्षसमहाराजः शोकपा
नामरुधिकागधुवासगनासाधं भूमिं कुरु ॥ ॥ हागतः जजमानस्य नूकः पायथः ॥ दवती ॥ ॥
कउत्तः कउपीवः ॥ ॥ इति निदयकर्मस्तः कुरुत्तरेण स्वस्वाहा ॥ ॥ दती ॥ ॥ ॐ विनूधका
महाराजः ॥ शोकपात्रः महधिकाः कुरुत्तरेण स्वस्वाहा ॥ ॥ भूमिं कुरु ॥ ॥ हागतः जजमानस्य
नूकः पायथः ॥ दवती ॥ ॥ कउत्तः कउपीवः ॥ ॥ इति निदयकर्मस्तः कुरुत्तरेण स्वस्वाहा ॥ ॥ दती ॥
॥ ॐ विनूपाक्षमहाराजः शोकपात्रः महधिकाः जगभगन्मसाधं सानि कुरु ॥ ॥ हाग

[illegible]

[illegible]

हिंसा

स्वाहा॥ ॥ पञ्चांगमस्तु॥ ॥ ॐ द्यादयामहानागा॥ ॥ सप्तवक्रायः कृताः सप्तपञ्चांगस्तु॥
॥ ॐ नमः श्रीगुरुसत्वाय॥ दवास्तुः सर्वतुष्टासि॥ ॥ स्नातासंपन्ननागः कनपूनाव
गंश्रुवसिद्धाः गुरुगर्जनव॥ यकेद्रुपितुमाः निवसन्ति दिवाः न कष्टजान्ः प्रियिविनेनरुः कृता
ऊनि विज्ञागनपञ्चांगस्तु॥ संपन्नदातेः सुरुक्षसंश्रितः सत्तायिहास्तु॥ अनुग्रहार्थं यमन
पिनेनीवसन्ति॥ दत्तायनं द्रव्ययवः सुनाययः यवादयास्तुः गिरिः मंनुपित्यः नगनष्टः सर्वस्तु॥
यवसंनिः सनीस्तुः सर्वास्तुः सम्यस्तत्तायः वापिकृताश्चिवासाः वापिनजग्यपूरः पत्वष्टुः कृ
प्यष्टुः वक्षस्तुः नीनश्रुष्टुः यममद्योष्टुः स्रवकाननेष्टुः शुचानयदवः गुरुष्टुः वीहातेवेष्टुः॥

नस्यमम्याष्टमभाष्ट॥सात्रउवःकृमनासायतमिनाविजा॥यिरुवसानिःत्रथाष्टवथाष्टव
लनष्टमहापथाष्टमहाससात्राष्टमहावनष्टाहिरिन्मुआष्टाधितानुयवःवसन्निद्यात्रावःम
लाननिष्टःदिपष्टोदियावःकृमनायावःमनेससात्राष्टावसंष्टियवःद्रष्टाप्रसानास॥ययधमा
त्या॥भुपंवतीःदिपंवतिःविमिवःएयाःयद्रुःतद्रुःचद्रुःकर्मसद्रुःसगन्तु॥६॥
आनवीःमहाशिवसात्रेः६मंवतिःयद्रुम्यानिष्टमष्टःप्राव्यशमानेमुत्वेष्टपनिचःप्रापपति
वायुःभनाभिपोक्तश्च॥६॥मयितना॥विपतिचःदनासष्टदेवःआकाःपितामहवः॥देवासंभना
तमिषनामाभवाभयद्रुआगत्रसंभनापतिपोक्तिकानिवद्वीनेः॥सकसकावः॥दिष्टतनायद्रु

नुभसविनासेयाः शान्तिवः पश्चिन् कुर्वन्निन् ॥ धूपवलि ॥ प्रसन्नसिनेवेद्यवः धनादिपात
वेव मनानसा ॥ लङ्गिडिडिनु ॥ १०० देवकर्मभसस्तु ॥ उक्तवः स्मस्यानवाभएवलिक्त
ग्रहः गमपाभ्यधुथडु ॥ शुभगमनवीसष्टः लङ्गनधनगहलमाः मानगमनाविस्मयन
सप्ततुद्रमहातुद्र ॥ समासितः लङ्गननालिहकिर्नडादिभिः नीनायकः प्राम्द्विधात्रीहिति
उमाश्रवापुसलवाक्यावः नीक्यावैवः अङ्गिनाः प्रपनाङ्गिताः लङ्गना नीमहानात्रीः धुनाकात्री
नीनायिः १०० दिः वदिधात्रीरुषिः लङ्गनाभिदस्यसविः सिन्धाङ्गिदिभिः नासत्राः ॥ गमेनावयित
कायिः धानरूपाः लङ्गना कपात्रिनि ॥ कत्रनीयायाः ॥ सत्वांगयमहाङ्गिताः सवर्गलावङ्गहस्ता

[illegible]

मयूनामूषावकाशकपासनीसंस्त्रातामूदमूद्रावकामानिचनमासुसु॥ ॥ ॐ विष्णुवी
गाजमात्रुधारुजिगृहवासनीशगद्राऊवीदमूद्रावशाविष्णुविवनमासुसु॥ ॥ ॐ वानाहिम
हिरवात्तूद्रावकाशिशोधयकमानाशाऊविदमूद्रावथात्रुपावनमासुसु॥ ॥ ॐ ॐ द्रायनि
ग्रजमात्रुधारुमागिमवासिनीशाथजाऊवि विदुजाव॥ ॐ द्रायनीनमासुसु॥ ॥ ॐ वामूद्रा
पुनमात्रुधारुकाशिशुकनरूपिनीदमूद्रावतांगारुसुवविदमूद्रावनामसुसु॥ ॥
ॐ मरुतामूषासिंहवासनीशगद्राऊवीदमूद्रावथात्रुपावनमासुसु॥ ॥ ॐ वामूद्रा
ॐ मूद्रावकाशिशोधयकमानाशाऊविदमूद्रावथात्रुपावनमासुसु॥ ॥ ॐ वामूद्रा

ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥
ववकी नवकी जंश ववना वव नउ ॥ कूं कूं कूं कान रूपं ॥ परस्मिन् वव नउ ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥
उपा नीः दम नूती मिमाः जीं जी मात लम सुं ॥ लं लं लं लमि नउ ॥ जय तु विज तु सिद्धि वद नमः ॥
॥ धं धं धं धा न रूपं ॥ धूं धूं धूं धी न धूं धी न ॥ य धा दि ना द धी धी ॥ कूं कूं कूं कूं लस रूपं ॥ जी ल व न
धालि नउ ॥ ज व न उ उ पा जं ॥ लं लं लं लं न ना थ ॥ सकल जन दिने ॥ न स्य द ल पि भ म वी ॥ कूं कूं कूं कूं
ल ना दे सक न ल य रु न ॥ सिद्धि वद नमः ॥ २ ॥ वं वं वं वं आ म धा न ॥ ल म नि ल व न ना ॥ भू फ पा
न ल न ल ॥ कूं कूं कूं कूं कान रूपं ॥ ध क नि न धा कि नुं श न स्य रु सुं जी सु तं ॥ कूं कूं कूं कूं उ य रूपं ल म

निवय नीनः तस्यैव स्वरूपं मम मम नु सिद्धि शक्त यत्न रुतः सिद्धि व द्रनमस्तु सु ॥ ३ ॥
मम मम काल रूपं मम नि मम ममा मपमा नास्तु ममि ४ कं कं कं काल धाती ० धू धू ति नः धू
लीनः धू धू मा नी कू मा नी ० धू धू धू धू मवु न् ॥ ए न व नि त्व न ता काल पां सा जी स्तु तं जं जं जं
जी रूपं मम लय रुत नः सिद्धि व द्रनमस्तु सु ॥ ४ ॥ ये नं नं या य पू न् ४ नू नू धि न सी जी नं ४ दि धि म
जि द्वा क ना तं ॥ पं पं पं पं नू रूपं ग स म य वी ज य सं ॥ स्वर द्र ज नी स्वर ॥ स ग्म म पी ति जा ता ज य
वी ज य पु ॥ श्री जी स्तु ता न का नी ॥ हिं क्री क्री काल ना द ग्ग ल ग व नि वु न दे ॥ सिद्धि व द्रनमस्तु सु ॥
५ ॥ हूं का न तू पि ॥ न त ए सि त्म र व ॥ सा न्द्रा न्द्रा न रि द्वा हूं का नी धा न ना द अ ए न य सि त्म सि

[illegible]

ॐ दंडिष्ठवत्यावन ॥ सांनि कू नू सारु ॥ ॥ पं ॥ ए ह न ए जा प उ हि ॥ सा दारु ति अ न
क म्ब व नू ल्म मी ती रु न पा वी क क था दा प र्व नी न वी ग ग थ ना व द्म नु त्व ह रि ॥ उ न वे द ग
दि र्ग ति स रु दि पा ति ग रु ग ल्म दू ष न्म मा ना द य ॥ को षा स प ति भा कि न य नु र्ग न ल वी द्वा पु म्भ
नू ष् ॥ ॥ व ति व ॥ न पु न पु न ॥ न्ना ग हा य कू ॥ द ग उ व ति वी या ॥ वी स र्ज न द्वा य ॥ नी सा य न
रु डी ॥ धा त क या थ स ग उं वा या वा न द्वा य ग सा स वि न थि नः ॥ उ का ए का न त प्र या यः थु नि
उ व्ही ल् व ति मा ल ॥ य ग्मी दि मा र्का व ति थ्व रु नो ग प र्शु न जा पा थ रु नो ॥ का र्थि या य वि दि
थ्वा ॥ वा रु नः रु कू द्म रु यिः म द न साः वा क थु नि गृ ह ॥ ॥ ॥ ॐ न मः श्री गुरु ब न

ममाउरुमनुजदिउगी॥ॐ हूं हूं स्वाहा॥ जाय॥ अरुपिथपूजामात्र॥ पूर्वबुद्धयनिपिताया
पूकात्रतीज॥ भो कृपीतः असिष्टिगले मवनागकृगवः प्रिकु महापद्मनागवतिरुषिवीक्षप
ताका॥ ॐ श्री श्री हूं हूं युयागस्य भवद्यासाय हूं हूं स्वाहा ॥ ॥ ३७ मनु ॥ ॐ नानपानियन
मस्वाहा॥ वीनायकस्यः ॐ साकदायः पुत्रकायः पीनमस्वाहा॥ ॥ कमानस्य ॥ ॐ महां काय
यनमस्वाहा॥ ॥ महां कायस्य ॥ ॐ आवकनागवकनाकश्रवणनृगधीध्वं हूं हूं स्वाहा॥ ॥ १
गत्यावारुनमनु ॥ ॐ उक्कनोनमस्वाहा॥ ॥ एजामनु ॥ ॐ ॐ हूं वज्रस्वाहा॥ ॥ एतम
स्य ॥ ॐ ॐ श्री नदिः मृतसकाशः धेनद्रमलयावरुजर्द्धिवीरूपाजा॥ उजपात्रगवरुद्रं नक्षत्रि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नाकसत धरा उलौख्य धार कोना भूष नमामि महिषासनी ॥ ५ ॥ एतद्धिम्भं द्रायनि कृष्ण
वर्णं यकात विरुणं वरुन उरु वरुनाधिपति ॥ तूत्रं हे वरुणी त्वत्तिमन्मया ॥ कुक्का एक भ्या
म ॥ ॐ क्रौं श्रीं हूं रुशा वाना नमोः वीद्यु वीनासाय हूं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ अथ पातस्य ॥ ॥ ॐ पंम रुद्रि
उ नत्राकं श्रवणु नर भिद्यु हूं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ आवाहनमेतु ॥ ॥ ॐ हूं रुद्र हूं रुद्र नम स्वाहा ॥
॥ ततमं नु ॥ ॥ ॐ हूं ध्यान वद्र स्वाहा ॥ हे वरुण ॥ ॥ अथ पूर्ववत् ॥ ॥ ॐ हूं रुद्र हूं रुद्र नम स्वाहा ॥
वर्ज रुक्मा ॥ ॐ यद्य नीः सह वदनीः साभ्याः नमामि गजि वारुणी ॥ ॥ ॥ एवायं श्रवाम् नु तत्त
यकात वज्रैः दवीका उरु संहान वरुण वायु उ देवत वीज वा ॥ ॐ किं ना लग्न लग्न वक्ती सिद्ध

नीलनेः॥ ॥ ॐ श्री ग्री देव यवी कीदृश्यः वीद्यु विना गमयः देव स्वाहा ॥ ॥ उपावस्य मा
हं य वामने सुनला क गज्जम्बु न २ श्री य देव स्वाहा ॥ ॥ नमः ॥ ॥ ॐ देव कावचः स्व
हा ॥ ॥ लेन वस्यः लघु पर्व वतः उति या वामने न क व म्नी गी क लिका पाव घा ग्री नी गा कृष्णा गि
कृत रू पि वन मा मि शो पु त वा हि नी ॥ ॥ नमः नमः हा व श्री गि ना सं का व वि दूः लघु न ले वः पि य
व म् व नी उ उ उ म रु भव त न क न उ क ना ग ॥ ॥ वलि ॥ ॥ सर्व व म् ॥ ॐ श्री ग्री देव व नी उ
उ उ य ॥ विद्यु ना ग्म य देव स्वाहा ॥ ॥ उपावस्य ॥ ॥ ॐ नमः हा व श्री ने सु न ला क गज्जम्बु
न २ सि य देव स्वाहा ॥ ॥ ज्वा वारु नमः ॥ ॥ ॐ देव म्हा ल श्री नमः स्वाहा ॥ ॥ नमः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ २ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ४ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ५ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ६ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रगः दुःखं देवता उद्यनी श्रीमहादेवः आदिना धर्मेनेमनसा देवि ॥ १ ॥ अथ वदो देव
ददेः पत्यकारं न्यः पारवति देवि ॥ २ ॥ त्रिभूवनः जोगे वै कंधदेश उदे श्वरि देवि ॥ ३ ॥
अदिपूरदेशेः रिन्ध श्वरि देवि ॥ ४ ॥ नवरकोत्तमेः दुर्गा भवानि देवि ॥ ५ ॥ वर्जकोत्त
मेः सुराणां ज्यो देवि ॥ ६ ॥ काशमरिदेशेः नाशाडा भवानि देवि ॥ ७ ॥ दिहिदेशेः वै
शथिः यदिर्मरुगदेशे जगत किमाशाः कद्गुदेशेः आसापुरि देवि ॥ ८ ॥ सुरताने

शे तुलादेवि ॥ २ ॥ पूर्णधानदेशः कोकिलादेवि ॥ १० ॥ द्वारिकादेशः तूष्णीदेवि ॥ ११ ॥
युजरातदेशः परुजरीदेवि ॥ १२ ॥ नारिकातिदेशः मुरनयजचनीदेवि ॥ १३ ॥ कुकानदेशः
शेचदिकादेवि ॥ १४ ॥ आसंखददेशः महाकारिदेवि ॥ १५ ॥ करंजदेशः जैरविदे
वि ॥ १६ ॥ मंगलादेशः भगवतीदेवि ॥ १७ ॥ सारामददेशः भद्रिकादेवि ॥ १८ ॥ सि
रुददेशः यद्मनिदेवि ॥ १९ ॥ इमदेशः इमावतिदेवि ॥ २० ॥ जवानदेशः उर्भकु
मारिदेवि ॥ २१ ॥ मकरमदेशः हिमनीदेवि ॥ २२ ॥ म्येतवाराभि म्यरदेशः

मंगलादेवि॥ २३॥ स्वर्गद्वारेः कन्याः कोमारिदेवि॥ २४॥ वृषुरिपुरदेशेः स
मकादेवि॥ २५॥ कटिकापुरः देशेः लेनुकादेवि॥ २६॥ मानहस्तदेशेः तुल
सादेवि॥ २७॥ उज्जयिनिदेशेः कशिपुदेवि॥ २८॥ क्षत्रपारदेशेः सतिदेवि॥ २९॥
चित्रवनेदेशेः व्यादिनवा निदेवि॥ ३०॥ मालवदेशेः उर निदेवि॥ ३१॥ पुष्कर
रदेशेः बाराहिदेवि॥ ३२॥ हरिहरः पुष्पदेशेः हरेः स्वप्नदेवि॥ ३३॥ गणेशदेवि॥ ग

शश्वरिदेवि॥ ३४॥ पिशागदेशेः साधविदेवि॥ ३५॥ वानारसि दन्त्रेः व्यर्गपुत्रादेवि ३६
शुजुष्वादेशेः शुभत्रोचनीदेवि॥ ३७॥ पुरुषोत्तमदेशेः महान्त स्त्रीदेवि॥ ३८॥ रुस्त्रि
नापूरिदेशेः भैशासनीदेवि॥ ३९॥ केदारदेशेः गौऋमातादेवि॥ ४०॥ चंडकोतमे
श्रीवर्जजोशिदेवि॥ ४१॥ सन्नाराष्ट्रदेशेः जैरिदेवि॥ ४२॥ श्रीश्रीदेशेः माताभारती
कादेवि॥ ४३॥ नीरकं धम्येः मनीवाशनीदेवि॥ ४४॥ मानशरोधुम्येः रुस्त्रिदेवि ४५

नेपालक्षेत्रेः वदन्तादेवि॥ ४६॥ त्रिभूवनदेशेः हंसरादेवि॥ ४७॥ दायनीका
तम्येः दंकिनीदेवि॥ ४८॥ माहाभोत्तम्येः पिशवः हंसकामनीदेवि॥ ४९॥
रातभंगदेशेः कारिकापानीदेवि॥ ५०॥ कांगुरुदेशेः कामाक्षादेवि॥ ५१॥
निरतावतदेशेः वामतिदेवि॥ ५२॥ वगरादेशेः वामतिदेवि॥ ५३॥ त्रिभू
वनदेशेः त्रिपुरासुं धरिदेवि॥ ५४॥ वनवाधिरनेसिंधिः श्याकास्य कामनीदेवि॥ ५५॥

शाश्वरिदेवि॥ ३४॥ पिशागदेशः माधविदेवि॥ ३५॥ वानारसिद्धदेविः व्यर्णपुत्रादेवि ३६
अनुष्मादेशः शुभजोवनीदेवि॥ ३७॥ पूरुषोत्तमदेशः महारुद्रादेवि॥ ३८॥ रुद्रि
नापूरिदेशः भैशासनीदेवि॥ ३९॥ केदारदेशः गौऋमातादेवि॥ ४०॥ चउकोत्तमे
श्रीवर्जजोशिदेवि॥ ४१॥ सन्नाराष्ट्रदेशः गौरिदेवि॥ ४२॥ श्रीश्रीदेशः मातामाली
कादेवि॥ ४३॥ नीरकधर्मः मनीवाशनीदेवि॥ ४४॥ मानशरोवुम्भः रुद्रिदेवि ४५

नैपातक्षत्रेः वदरादेवि॥ ४६॥ त्रिभूवनदेशेः रुसरादेवि॥ ४७॥ दाशनीका
तम्येः दकिनीदेवि॥ ४८॥ माहाभोतम्येः पिशवः रुसकामनीदेवि॥ ४९॥
रातभगदेशेः कारिकापाअनदेवि॥ ५०॥ कांगुरुदेशेः कामाक्षादेवि॥ ५१॥
निरतावतदेशेः वामतिदेवि॥ ५२॥ वगरादेशेः वागमतिदेवि॥ ५३॥ त्रिभू
वनदेशेः त्रिपूरासुधरिदेवि॥ ५४॥ वनवाधिपुत्रेः सिंधिः व्याकास्य कामनीदेवि॥ ५५॥

या तारेनाग्निः महे मयतेः वसुधरादेवि॥ ५५॥ ब्रह्मपुरिः देशे ब्रह्मायनीदेवि॥ ५६॥
विष्णुपुरिः नारायणिदेवि॥ ५७॥ रुद्रपुरिः रुद्रायनीदेवि॥ ५८॥ इन्द्रपुरिः इन्द्र
यनिदेवि॥ ५९॥ राजारामनः गृहे मनो धरिदेवी॥ ६०॥ पावपादतः गुरु रूप
तिदेवि॥ ६१॥ हातुहृत्तियः वातवत्तियः धरं किजार्ः इश्वरिः पुम्ये श्रीरिः पर
धत्तिः जतिशक्ति॥ कासिवादः कदनीः जागदेशेः जागे श्रीरिदेवि॥ ६३॥ भंदा

रः भरिपुत्र ॥ परमो धुरि चण्डेशः पिरकोट्येदेवि ॥ ६४ ॥ शित्तरं कुत्र मे मा
ता सुमा राजो जानीशः नादिका भेदः तत्कोट्याक रिय ॥ श्रीमाहादेव नैना
दिनतपथिज्यप्तर चित्तः तस्य फल आशाः रिद्धि सिद्धि चतुरश आशाः कार
कतः दूरजाहः इति श्री चौश थिज्यो यितोत्रं शमायतं ॥ ॥ ७३ नमस्तु ॥